ग्रामीण महिलाओं की शैक्षिक स्थिति एवं रोजगार पर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का प्रभाव

डॉ. ज्योति जोशी
गेस्ट फैकल्टी, असि0 प्रोफे0
समाजशास्त्र विभाग
रा. स्ना. महाविद्यालय रानीखेत (अल्मोड़ा)
Email: jyotijoshicool29@gmail.com

सारांश

कृषि सम्बन्धित शिक्षा में अधिकतर महिलाऐं कषषि की नवीन तकनीक एवं उपकरणों का ज्ञान बताती है। रोजगार के संदर्भ में सर्वाधिक ग्रामीण महिलाऐं मानती है कि उन्हें रोजगार प्राप्त हुआ है। रोजगारों के प्रकारों में सर्वाधिक गैर–सरकारी एवं स्वरोजगार की प्राथमिकता बताती है। रोजगार प्राप्त करने में सहायता के संदर्भ में सर्वाधिक महिलाऐं विज्ञापनों के द्वारा, रोजगार की जानकारी मानती है। विज्ञापनों द्वारा किस प्रकार की जानकारी के संदर्भ में ग्रामीण महिलाऐं क्रमशः बागवानी एवं कुटीर उद्योग, सरकारी एवं पशुपालन व्यवसाय की प्राथमिकता बताती है। रोजगार पर प्रभाव के संदर्भ में सर्वाधिक प्रभाव सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकारों का मानती है। सकारात्मक प्रभाव में सर्वाधिक कार्य उचित समय में हो जाना एवं रोजगार सम्बन्धित सूचनाऐं समय पर उपलब्ध होना तथा नकारात्मक प्रभाव में मशीनीकरण के कारण रोजगार के अवसरों में कमी बताती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ग्रामीण महिलाओं की शैक्षिक स्थिति एवं रोजगार पर प्रभाव डालता है।

मुख्य शब्द– *इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, शैक्षिक स्थिति, रोजगार।*

प्रस्तावना

शिक्षा मनुष्य के जीवन का महत्वपूर्ण लक्ष्य होने के साथ–साथ वांछनीय लक्ष्यों की पूर्ति का एक उपयोगी साधन भी है, यह व्यक्ति के व्यक्तित्व व बुद्धि का विकास कर उसे आर्थिक, राजनीतिक व सांस्कषतिक कार्यो को सम्पन्न कराने के योग्य बनाती है। शिक्षा को एक ऐसे उपकरण के रुप में भी मान्यता दी गयी है, जिसकी सहायता से समाज में परिवर्तन व विकास के लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है। इसे समाज एवं राष्ट्र के लिये संजीवनी माना गया है। मानवीय संसाधनों के पूर्ण विकास, परिवार में सुधार, बच्चों के चरित्र निर्माण, देश के उत्थान आदि के लिये महिलाओं की शिक्षा महत्वपूर्ण है, परन्तु भारत के लिये यह दुर्भाग्य का विषय है कि वर्तमान में भी महिलाओं की शिक्षा का पर्याप्त विकास नही हो पाया है।

महिलाओं की शिक्षा का अर्थ है पूरे परिवार की शिक्षा, समाज और राष्ट्र की शिक्षा। परिवार व समाज के लिये प्रथम शिक्षिका के रुप में एक सुशिक्षित स्त्री नैतिकतावादी तथ्यों को उचित रुप से परिवार व समाज में स्थापित कर सकती है। समाज में शिक्षित स्त्री किसी भी कार्य क्षेत्र में पुरुष से पीछे नही है। महिलाओं को शिक्षित बनाना अत्यन्त आवश्यक है। शिक्षा द्वारा वे अपने अधिकारों व कर्तव्यों के प्रति जागरुक होगी। शिक्षित महिला अपने परिवारिक जीवन में गुणवत्ता को बढ़ा के विकास के क्षेत्र में सक्रिय योगदान करेगी। वह न केवल परिवार वरन् सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक क्षेत्र में भी अग्रणी रहेगी।

महिलाओं की शैक्षिक स्थिति को सुदृढ़ करने में वर्तमान में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के साधनों ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन किया है। ग्रामीण क्षेत्रों में भी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा शिक्षा का प्रचार–प्रसार तीव्र गति से हो रहा है, जिसके सकारात्मक परिणाम देखने को मिले है। शिक्षित ग्रामीण महिलाओं के विचारों को पारिवारिक निर्णयों में प्राथमिकता दी जाती है, साथ ही उनकी सामाजिक स्थिति पहले की अपेक्षा उच्च हुयी है। महिलायें अब केवल ज्ञान प्राप्ति के लिए शिक्षा को अनिवार्य नहीं मानती, बल्कि आर्थिक रुप से आत्मनिर्भरता तथा उच्च सामाजिक स्थिति प्राप्त करने हेतु आवश्यक मानती है।

शिक्षा के द्वारा ही ग्रामीण महिलाऐं स्वयं का सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक विकास कर सकती है। महिला शिक्षा समाज एवं राष्ट्र के लिए अत्यन्त आवश्यक है, जिसके द्वारा महिलाओं की प्रगति एवं विकास हो सकेगा तथा देश उन्नति के पथ पर अग्रसर होगा। आधुनिकता के दौर में शिक्षा का महिलाओं के रोजगार पर भी प्रभाव पड़ता है। शिक्षित महिलाऐं सरकारी, गैर–सरकारी नौकरियों के साथ–साथ औद्योगिक क्षेत्रों एवं स्वरोजगार द्वारा भी आमदनी प्राप्त कर न केवल अपना वरन् अपने सम्पूर्ण परिवार का आर्थिक उत्तरदायित्व निर्वहन करती है तथा समाज में स्वयं एवं स्वयं के परिवार को सम्मानजनक स्थान प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

साहित्य का पुनरावलोकन–

अर्चना सक्सेना[1] (2012) ने अपने अध्ययन में बताया कि अध्ययन में 18 प्रतिशत महिलाऐं कामकाजी है और 72 प्रतिशत महिलाऐं गृहिणी है। परन्तु इस सबके विपरीत 95 प्रतिशत महिलाऐं मोबाइल फोन का प्रयोग करती है और केवल 20 प्रतिशत महिलाऐं ही इंटरनेट के बारे में जानकारी रखती है। 23.1 प्रतिशत महिलाऐं बैक की शाखा में जाकर लेन–देन करती है। बैकों के द्वारा इंटरनेट ए.टी.एम की सुविधा होने के बावजूद केवल 19.2 प्रतिशत महिलाऐं ए.टी.एम का प्रयोग करती है और इंटरनेट बैकिंग का प्रयोग केवल 15.4 प्रतिशत महिलाऐं ही करती है। 75 प्रतिशत महिलाऐं इंटरनेट/मोबाइल बैकिंग का प्रयोग निजी बैंको द्वारा ही करती है।

एम. एन. सिंह[2](2012) ने लिखा है कि मीडिया ने महिलाओं के अन्दर जमाने से आगे बढ़ जाने की भावना विकसित की है, इसी भावना से प्रेरित होकर स्वयं को खुले और उन्मुक्त वातावरण में रखकर शीघ्रता से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रही है। मीडिया के कारण ही इनकी सोच और व्यवहार में विगत कुछ वर्षो में अविस्मरणीय परिवर्तन आया है। मीडिया ने वर्तमान समय

में महिलाओं को स्वावलम्बी बना दिया है, महिलाऐं प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रही है। पहले जो वे घर की चारदीवारी में कैद होकर रह गई थी, आज उनकी भागीदारी प्रत्येक क्षेत्र में दिखायी पड़ती है।

गीतांजली[3] (2012) ने लिखा है कि ''टेलीविजन से जीवन के विविध क्षेत्रों में व्यक्ति का ज्ञानवर्धन होता है। यह एक महत्वपूर्ण जनसंचार का माध्यम है। टेलीविजन इस ओर महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। यह रेडियो तथा समाचार पत्रों से अधिक प्रभावी सिद्ध हुआ है।'' टेलीविजन संचार का महत्वपूर्ण घटक है, जो सूचनाओं के द्वारा विचारों का प्रसारण करता है, साथ ही समाज में परिवर्तन के लिए वातावरण का निर्माण करता है। वर्तमान में टेलीविजन मनोरंजन तथा समसामयिक कार्यक्रमों के प्रसारण का सामान्य स्त्रोत है जो विभिन्न सूचनाओं और जानकारियों को जन–जन तक पहुँचाता है। दूरदर्शन की बढ़ती लोकप्रियता लोगों के जीवन में नये–नये बदलाव ला रहीं है, यह बदलाव केवल एक स्तर पर या एक वर्ग तक ही सीमित न होकर व्यक्ति, समूह एवं सम्पूर्ण समाज पर परिलक्षित हो रहा है।

ओ.पी.मिश्रा एवं छाया तिवारी[4] (2013) ने लिखा है कि, वर्तमान समय में महिलाओं में आई चेतना के फलस्वरुप वे अपने अधिकारों के प्रति सजग हुई है। इसमें मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। जनसंचार माध्यमों ने महिलाओं को केवल उनके अधिकारों के विषय में ही जागरुक नही किया है, वरन् उन्हें स्वावलम्बी बनाने, उनकी आर्थिक–राजनीनिक स्थिति सुधारने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जनसंचार माध्यमों ने महिला उद्यमियों एवं कषि क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार कर उन्हें आर्थिक रुप से सशक्त किया है। महिलाओं के लिए कौन–कौन सी योजनाऐं चल रही है इसकी जानकारियां संचार माध्यमों द्वारा ही उन तक पहुंच रही है।

कृष्ण चन्द्र चौधरी[5](2013) ने लिखा है कि, वर्तमान समय में संचार माध्यम महिलाओं के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। बाल विवाह अधिनियम, विधवा गुजारा भत्ता, कार्यस्थल पर यौन शोषण के प्रति जागरुकता या शिक्षा, इन सभी बातों की जानकारी मीडिया के द्वारा ही महिलाओं तक पहुंचायी जा रही है।

ललित चन्द्र जोशी[6] (2015) ने लिखा है कि आज इलेक्ट्रॉनिक प्रौद्योगिकी ने संचार क्रान्ति ला दी है, जिसका तीस वर्ष पूर्व अस्तित्व ही नहीं था। कम समय में संचार के क्षेत्र में हुए प्रगति या परिवर्तन से विकास तीव्रता से हुआ है। संचार सुविधाओं का विस्तार जिस गति से हुआ है, उसका समाज पर प्रभाव पड़ रहा है। महिलाओं में शिक्षा का प्रसार, स्वास्थ्य के प्रति चेतना, घरेलू समस्याओं का निदान, सकारात्मक सोच का विकास आदि इसी के परिणाम है।

शोध प्रारुप एवं प्रतिदर्श

प्रस्तुत अध्ययन में लालकुंआ तहसील की खड़कपुर ग्रामसभा के खड़कपुर क्षेत्र को अध्ययन हेतु चुना गया है। अध्ययन हेतु वर्णनात्मक एवं अन्वेषणात्मक शोध प्रारुप का प्रयोग करते हुए 60 विवाहित ग्रामीण महिलाओं का चयन, उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति द्वारा किया गया है। प्राथमिक तथ्य संकलन हेतु अवलोकन, साक्षात्कार–अनुसूची एवं द्वैतीयक तथ्यों के संकलन हेतु

शोध–पत्र, पत्रिकाओं का प्रयोग किया गया है।

उद्देश्य– 1–ग्रामीण महिलाओं की शैक्षिक स्थिति पर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

2–इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का रोजगार के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करना।

उपलब्धियाँ–

अध्ययन की प्रमुख उपलब्धियाँ निम्नानुसार है–

तालिका संख्या–1

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया किस प्रकार के शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रसार करता है, के संदर्भ में उत्तरदाताओं का प्रत्युत्तर

प्रत्युत्तर का स्वरुप	आवृत्ति	प्रतिशत
कृषि शिक्षा से सम्बन्धित	14	23.33
साक्षरता एवं प्रौढ़ शिक्षा से सम्बन्धित	19	31.67
स्वास्थ्य शिक्षा से सम्बन्धित	27	45.00
कुल योग	60	100

तालिका संख्या 1 से स्पष्ट होता है कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया किस प्रकार के शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रसार करता है। 23.33 प्रतिशत ग्रामीण महिलाऐं कृषि शिक्षा से सम्बन्धित, 31.67 प्रतिशत साक्षरता एवं प्रौढ़ शिक्षा से सम्बन्धित, 45.00 प्रतिशत स्वास्थ्य शिक्षा से सम्बन्धित मानती है।

अध्ययन द्वारा प्राप्त ऑकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि उत्तरदाताओं को इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा प्रसारित शैक्षिक कार्यक्रमों की जानकारी है। कृषि सम्बन्धी शिक्षा के अन्तर्गत उन्नत किस्म के बीजों एवं खादों की जानकारी, कृषि के नवीनतम उपकरणों का ज्ञान, मृदा जॉच आदि को सम्मिलित किया गया है। साक्षरता एवं प्रौढ़ शिक्षा के अन्तर्गत निर्धन तथा अधिक आयु के व्यक्तियों को शिक्षित करने का कार्यक्रम चलाया गया। स्वास्थ्य शिक्षा के अन्तर्गत बीमारी, जच्चा–बच्चा सुरक्षा योजना एवं टीकाकरण, प्रसव सुविधा, पल्स पोलियों अभियान एवं परिवार नियोजन की जानकारी प्रमुख है। इसके अतिरिक्त ग्रामीण महिलाओं ने सामाजिक सुरक्षा अभियान, स्वच्छता अभियान एवं आपदा प्रबन्धन अभियान सम्बन्धी ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों को भी बताया है।

तालिका संख्या–2

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यमों द्वारा स्वास्थ्य सम्बन्धित जानकारी प्रदान करने के संदर्भ में उत्तरदाताओं का प्रत्युत्तर

प्रत्युत्तर का स्वरुप	आवृत्ति	प्रतिशत
बीमारियों की जानकारी	13	21.67
प्रसव सुविधा की जानकारी	21	35.00

टीकाकरण की जानकारी	12	20.00
परिवार नियोजन की जानकारी	14	23.33
कुल योग	60	100

तालिका संख्या 2 इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यमों द्वारा स्वास्थ्य सम्बन्धित जानकारी प्रदान करने के संदर्भ में है। तालिका द्वारा स्पष्ट है कि 21.67 प्रतिशत महिलाओं को बीमारियों की जानकारी, 35.00 प्रतिशत को प्रसव सुविधा की जानकारी, 20.00 प्रतिशत को टीकाकरण की जानकारी तथा शेष 23.33 प्रतिशत को परिवार नियोजन की जानकारी प्राप्त होती है। ऑकड़ों द्वारा स्पष्ट होता है कि महिलाओं को इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा क्रमशः सर्वाधिक प्रसव सुविधा, परिवार नियोजन एवं बीमारियों की जानकारी प्राप्त हुई है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम विभिन्न कार्यक्रमों एवं विज्ञापनों के माध्यम से स्वास्थ्य सम्बन्धी शिक्षा प्रदान करते है। बीमारियों के संदर्भ में गंभीर बीमारी जैसे– एड्स, कैंसर, टी0बी0 जैसी बीमारियों के प्रति लोगों को जागरूक बनाते है। प्रसव सुविधा की जानकारी के सम्बन्ध में आशा कार्यकत्रियों की भूमिका एवं जच्चा–बच्चा को स्वस्थ रखने सम्बन्धी कार्यक्रम प्रसारित करते है, इन कार्यक्रमों का ही परिणाम है कि वर्तमान समय में ग्रामीण क्षेत्रों की अधिकतर महिलाऐं प्रसव घर में करने के स्थान पर अस्पताल में करवाती है। सरकार की चलायी जा रही जच्चा–बच्चा सुरक्षा योजना का ग्रामीण महिलाऐं लाभ प्राप्त कर रही है इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम महिलाओं को टीकाकरण सम्बन्धी जानकारी भी प्रदान कर रहे है, परिवार नियोजन की जानकारी के अन्तर्गत, उन्हें सीमित परिवार के महत्व, संतानों की संख्या एवं ''हम दो हमारे दो'' बच्चों के जन्म में अन्तराल के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

तालिका संख्या–3

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के साधनों की उपलब्धता से स्वास्थ्य सुविधाओं पर प्रभाव, के संदर्भ में उत्तरदाताओं का प्रत्युत्तर

प्रत्युत्तर का स्वरुप	आवृत्ति	प्रतिशत
स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँच	19	31.67
बेहतर चिकित्सकीय सुविधाऐं	07	11.67
उत्तम स्वास्थ्य	11	18.33
रोग प्रतिरोधक क्षमता का विकास	15	25.00
गंभीर बीमारियों के प्रति जागरुकता	08	13.33
कुल योग	60	100

तालिका संख्या 3 इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के साधनों की उपलब्धता से स्वास्थ्य पर प्रभाव के संदर्भ में है। 31.67 प्रतिशत ग्रामीण महिलाऐं मानती है कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के साधनो से स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुॅच आसान हुई है, 11.67 प्रतिशत बेहतर चिकित्सकीय सुविधाऐं, 18.33 प्रतिशत उत्तम स्वास्थ्य, 25.00 प्रतिशत रोग प्रतिरोधक क्षमता का विकास, 13.33 प्रतिशत

गंभीर बीमारियों के प्रति जागरूकता आयी मानती है। अध्ययन से प्राप्त ऑकड़ों से स्पष्ट होता है कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के साधनों से ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं के स्वास्थ्य पर अच्छा प्रभाव पड़ा है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के साधन विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यमों से जागरूकता उत्पन्न करते है, जिससे ग्रामीण क्षेत्र के व्यक्तियों की स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँच आसान हुई है। इसमें सरकार द्वारा चलाई गयी 108 एम्बुलैस (मोबाइल नं0) सुविधा प्रमुख है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम बेहतर चिकित्सकीय सुविधाऐं प्रदान करने में कारगर सिद्ध हुए है। महिलाओं को प्रसव सम्बन्धी सुविधा, जच्चा–बच्चा सुरक्षा योजना इसका ही परिणाम है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा प्रसारित कल्याणी स्वास्थ्य कार्यक्रम उत्तम स्वास्थ्य के लिये आवष्यक दैनिक सन्तुलित आहार, षारीरिक व्यायाम, बीमारी की जानकारी एवं बचने के उपाय, दैनिक दिनचर्या में बदलाव लाकर व्यक्ति अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता का विकास कैसे कर सकता है आदि की जानकारी प्रदान करता है। गम्भीर बीमारियों के प्रति जागरूकता के अर्न्तगत इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एच0आई0वी0 एडस, टी0बी0 कैसंर, टाईफाइड, हैजा, डेंगू, मलेरिया, चिकनगुनिया आदि गम्भीर बीमारियों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करता है। उनसे बचने के उपाय भी बताता है।

तालिका संख्या–4

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा रोजगार प्राप्त करने के संदर्भ में उत्तरदाताओं का प्रत्युत्तर

प्रत्युत्तर का स्वरुप	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	49	81.67
नही	11	18.33
कुल योग	60	100

तालिका संख्या 4 इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा रोजगार प्राप्त करने के संदर्भ में है। 81. 67 प्रतिशत ग्रामीण महिलाऐं मानती है कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा रोजगार प्राप्त हुआ है, 18. 33 प्रतिशत ऐसा नही मानती है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया विभिन्न कार्यक्रमों, विज्ञापनों, समाचार पत्रों द्वारा रोजगार प्राप्ति में सहायक हो रहा है। रोजगार प्राप्त कर ग्रामीण महिलाऐं उन्नति की ओर अग्रसर हो रही है।

तालिका संख्या–5

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा रोजगार के विषय में जानकारी के संदर्भ में उत्तरदाताओं का प्रत्युत्तर

प्रत्युत्तर का स्वरुप	आवर्षत्ति	प्रतिशत
स्वरोजगार	33	55.00
सरकारी नौकरी	15	25.00
गैर–सरकारी नौकरी	12	20.00
कुल योग	60	100

तालिका संख्या 5 इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा रोजगार के विषय में जानकारी के संदर्भ में है। 55. 00 प्रतिशत सूचनादात्रियॉ स्वरोजगार, 25.00 प्रतिशत सरकारी नौकरी, 20.00 प्रतिशत गैर–सरकारी नौकरी की जानकारी प्राप्त हुई मानती है। ऑकड़ों द्वारा स्पष्ट होता है कि क्रमशः सर्वाधिक गैर–सरकारी एवं स्वरोजगार की जानकारी प्राप्त हुई है, स्वरोजगार के अवसरों का यह लाभ भी प्राप्त कर रही है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हो रहे है। सरकारी नौकरियों के विज्ञापन, औद्योगिक प्रतिष्ठानों में नौकरी, मनरेगा योजना के अर्न्तगत रोजगार, स्वरोजगार को प्रोत्साहित करने की जानकारी प्रदान कर रहे है। स्वरोजगार के अवसरों का ग्रामीण महिलाऐं लाभ भी प्राप्त कर रही है। आज ग्रामीण क्षेत्रों में दुग्ध व पशुपालन व्यवसाय के साथ–साथ आचार, जैम–जैली, मुरब्बा, स्कवैश, चटनी, मोमबत्ती, धूप, अगरबत्ती बनाने जैसे स्वरोजगार अधिक से अधिक प्रयोग में लाये जा रहे है।

तालिका संख्या–6

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया रोजगार प्राप्त करने में किस प्रकार सहायता करता है, के संदर्भ में उत्तरदाताओं का प्रत्युत्तर

प्रत्युत्तर का स्वरुप	आवर्षत्ति	प्रतिशत
विज्ञापनों के द्वारा	26	43.33
रोजगार समाचार द्वारा	15	25.00
अतिशीघ्र सूचनाऐं प्रदान करके	19	31.67
कुल योग	60	100

तालिका संख्या 6 इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, रोजगार प्राप्त करने में किस प्रकार सहायता करता है, के संदर्भ में है। 43.33 प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं का मानना है कि विज्ञापनों के द्वारा, 25.00 प्रतिशत रोजगार समाचार द्वारा, 31.67 प्रतिशत अतिशीघ्र सूचनाऐं प्रदान करके। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम, विज्ञापनों, रोजगार समाचारों तथा अति शीघ्र सूचनायें प्रदान करके, रोजगार प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हो रहे है। विज्ञापनों एवं रोजगार समाचार द्वारा ग्रामीण महिलाओं को रोजगार की जानकारी प्राप्त हो रही है और वह इसका लाभ रोजगार प्राप्त कर उठा रही है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम अतिशीघ्र सूचनाऐं प्रदान करके भी रोजगार प्राप्त करने में सहायक हो रहे है। कुछ समय पूर्व तक ग्रामीण क्षेत्रों में सूचनाऐं देरी से पहुचने के कारण व्यक्ति रोजगार प्राप्त करने से वंचित रह जाता था। ग्रामीण क्षेत्रों के व्यक्तियों को आवेदन पत्रों, प्रवेश पत्रों, नियुक्ति पत्रों आदि के लिये डाकघर आदि पर आश्रित रहना होता था परन्तु आज मोबाइल फोन, टेलीविजन, कम्प्यूटर, इन्टरनेट द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में भी अति शीघ्र सूचनाऐं प्राप्त हो रही है, जो रोजगार प्राप्त करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

तालिका संख्या–7

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा रोजगार पर प्रभाव के संदर्भ में उत्तरदाताओं का प्रत्युत्तर

प्रत्युत्तर का स्वरुप	आवृत्ति	प्रतिशत
सकारात्मक	26	43.33
नकारात्मक	13	21.67
दोनों	21	35.00
कुल योग	60	100

तालिका संख्या 7 इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा रोजगार पर प्रभाव के संदर्भ में है। 43.33 प्रतिशत ग्रामीण महिलाऐं रोजगार पर सकारात्मक प्रभाव, 21.67 प्रतिशत नकारात्मक तथा 35. 00 प्रतिशत दोनों तरह के प्रभाव को मानती है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का रोजगार पर प्रभाव के सम्बन्ध में माना गया है कि रोजगार पर सकारात्मक, नकारात्मक तथा दोनों (सकारात्मक एवं नकारात्मक) प्रभाव पड़े है।

सकारात्मक प्रभाव के अर्न्तगत रोजगार सम्बन्धित सूचनाओं की जानकारी, रोजगार के विज्ञापनों एवं रोजगार सम्बन्धी दस्तावेज की समय पर उपलब्धता, कार्य करने में समय न लगना आदि है। नकारात्मक प्रभाव के अर्न्तगत मशीनीकरण के कारण रोजगार का अभाव, कार्यकुशलता पर प्रभाव, पारस्परिक सम्बन्धों पर प्रभाव है। दोनों (सकारात्मक एवं नकारात्मक) प्रभाव के अर्न्तगत दोनों ही प्रकार के प्रभाव देखने को मिलते है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में ग्रामीण महिलाओं की शैक्षिक स्थिति एवं रोजगार पर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। अध्ययन द्वारा स्पष्ट होता है कि अधिकतर ग्रामीण महिलाऐं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के द्वारा प्रसारित शैक्षिक कार्यक्रमों के विषय में जानती है। शैक्षिक कार्यक्रमों में वे सर्वाधिक साक्षरता एवं प्रौढ़ शिक्षा, स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम से परिचित है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा स्वास्थ्य सम्बन्धित सुविधाऐं प्रदान करने के संदर्भ में ग्रामीण महिलाऐं सर्वाधिक प्रसव एवं परिवार नियोजन सुविधा मानती है। अधिकतर ग्रामीण महिलाऐं परिवार नियोजन के रुप में दो संतान वाले परिवार को अधिक महत्व देती है। स्वास्थ्य पर प्रभाव के संदर्भ में महिलाऐं ज्यादातर गंभीर बीमारियों के प्रति जागरुकता एवं चिकित्सकीय सुविधाओं की जानकारी मानती है।

संदर्भ ग्रन्थ

1–सक्सेना, अर्चना, 2012, *'महिलाओं में मोबाइल/इंटरनेट बैकिंग प्रयोग की स्थिति', राधाकमल मुकर्जी : चिंतन परम्परा,* वर्ष 14, अंक 2, पृष्ठ **134–135**

2–सिंह, एम. एन., 2012 *'मीडिया एवं महिला विकास', आधुनिक समाजशास्त्रीय निबन्ध,* विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली–7, पृष्ठ **110–114**

3—गीतांजलि, 2012, *'टेलीविजन कार्यक्रमों का बच्चों पर सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव', राधाकमल मुकर्जी : चिन्तन परम्परा,* वर्ष—14, अंक—2, पृष्ठ **130—133**

4—मिश्रा, ओ. पी. एवं तिवारी, छाया, 2013, *'ग्रामीण महिलाओं को सशक्त करता मीडिया', कुरुक्षेत्र,* वर्ष 59, अंक 10, पृष्ठ **21—22**

5—चौधरी, कृष्ण चन्द्र, 2013, *'मनोसामाजिक सशक्तिकरण से ग्रामीण महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार', कुरुक्षेत्र,* वर्ष 59, अंक 12, पृष्ठ **59**